आर्डर-फार्म

विपश्यना विशोधन विन्यास, धम्मगिरि

हिन्दी प्रकाशन

❑ **निर्मल धारा धर्म की** *१९९५, पृष्ठ १६२, रु. ६५/-*
धर्म न हिंदू है न बौद्ध, न मुस्लिम है न जैन, न सिक्ख है न ईसाई। धर्म सार्वजनीन है। इन्हीं प्रवचनों का संक्षिप्त संकलन इस पुस्तक में संगृहीत है।

❑ **प्रवचन सारांश** *१९९२, पृष्ठ ११०, रु. ४५/-*
दस-दिवसीय शिविरों में पू. गुरुजी द्वारा दिये गये प्रवचनों का सारांश संकलन है।

❑ **जागे पावन प्रेरणा** *१९९४, पृष्ठ २१६, रु. ८०/-*
इस पुस्तक में पू. गुरुजी ने सरल तथा सुस्पष्ट ढंग से बुद्ध का जीवन और उनके उपदेशों का वर्णन किया है।

❑ **जागे अन्तर्बोध** *१९९४, पृष्ठ २००२, रु. ८५/-*

❑ **धर्मः आदर्श जीवन का आधार** *१९९६, पृष्ठ १०६, रु. ४५/-*
इस पुस्तक में सरल तरीके से धर्म की व्याख्या की गयी है।

❑ **तिपिटक में सम्यक संबुद्ध भाग २ (अजिल्द)** *१९९५, पृष्ठ ३२०, रु. १३०/-*
तिपिटक के आधार पर बुद्ध के उपदेशों की गहन व्याख्या। पू. गुरुजी ने बुद्ध के उपदेशों को सविस्तार, पालि के बहुत से उद्धरण तथा उनके हिन्दी में अर्थ देकर समझाया है।

❑ **धारण करे तो धर्म** *१९९९, पृष्ठ १८२, रु. ८०/-*
बुद्ध के जीवन से संबंधित तथा धर्म की व्याख्या करनेवाली प्रेरणादायक कहानियां।

❑ **क्या बुद्ध दुःखवादी थे?** *२०००, पृष्ठ ९६, रु. ४५/-*
बुद्ध दुःखवादी नहीं थे। उदाहरण के साथ विस्तार से इसे यहां समझाया गया है।

❑ **मंगल जगे गृही जीवन में** *२०००, पृष्ठ ११०, रु. ४०/-*
बुद्ध की वाणी पर आधारित इस पुस्तक में यह समझाया है कि गृहस्थ गृही जीवन में कैसे सामंजस्य स्थापित कर सकता है।

❑ **धम्मवाणी संग्रह** *२०००, पृष्ठ ९२, रु. ४०/-*
विपश्यना (हिन्दी) पत्रिका से विषयवार मूल्यवान संग्रह। इस में पालि गाथाओं के साथ-साथ उनके हिन्दी अनुवाद भी हैं।

❑ **विपश्यना पगोडा स्मारिका** *२०००, पृष्ठ १८६, रु. १००/-*
मुंबई के निकट बननेवाले विश्व विपश्यना पगोडा की नींव रखे जाने के शुभ अवसर पर लिखे गये पत्रों का संग्रह।

❑ **सुत्तसार - १** *२००१, पृष्ठ २३६, रु. ९५/-*
इसमें दीघनिकाय और मज्झिमनिकाय के सुत्तों का सार है।

❑ **सुत्तसार - २** *२००१, पृष्ठ २०४, रु. ९०/-*
इसमें संयुत्तनिकाय के सुत्तों का सार है।

❑ **सुत्तसार - ३** *२००१, पृष्ठ १६८, रु. ४५/-*
इसमें अंगुत्तरनिकाय और खुद्दकनिकाय के सुत्तों का सार है।

❑ **धन्यवाबा (आत्मकथन)** *२००२, पृष्ठ १३२, रु. ३५/-*
पूज्य गुरुजी के बचपन में अपने बाबा का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। उन्हीं बाबा के प्रति कृतज्ञता में लिखे उनके दोहे और उनके जीवन के रोमांचकारी संस्मरणों को इस पुस्तक में विस्तार से लिखा है।

❑ **कल्याणमित्र सत्यनारायण गोयन्का - व्यक्तित्व और कृतित्व, लेखक - श्री बाल कृष्ण गोयन्का** *२००२, पृष्ठ १२०, रु. ५०/-*
पू. गुरुजी के जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं का तथा उनके द्वारा विश्व के कल्याण के लिए किये जा रहे कार्यों का विस्तार से वर्णन है।

❑ **पातंजल योगसूत्र, लेखक - सत्येन्द्रनाथ टंडन** *२००३, पृष्ठ १२८, रु. ५०/-*
योगसूत्र के प्रणेता महर्षि पतञ्जलि बुद्ध के कुछ शताब्दी बाद हुए। बुद्ध के उपदेशों से बड़ी मात्रा में सार ग्रहण कर इन्होंने योगसूत्र का प्रणयन किया। यहां योगसूत्र के संदर्भों की तुलना पालि तिपिटक संदर्भों से की गयी है।

❑ **आहुनेय्य, पाहुनेय्य, अंजलिकरणीय डॉ. ओम प्रकाश जी** *२००३, पृष्ठ ६८, रु. ३०/-*
इस पुस्तक में डॉक्टर साहब के मौखिक कथनों तथा उनसे प्राप्त हुए पत्रों में अंकित पंक्तियों का विवरण है।

❑ **राजधर्म** *२००३, पृष्ठ ८६, रु. ३५/-*
यह तिपिटक और इतिहास पर आधारित एक ऐसी शोधपरक पुस्तक है जो न केवल राजधर्म के गुणों को अपना कर आचरण सुधारने की प्रेरणा देती है, बल्कि भगवान बुद्ध और सम्राट अशोक के बारे में फैली गलत धारणाओं को दूर कर उनका स्पष्टीकरण भी प्रस्तुत करती है।

❑ **आत्म-कथन** *२००३, पृष्ठ ११६, रु. ५०/-*
यह पूज्य गुरुजी की आत्मकथा है जिसमें उन्होंने अपनी आध्यात्मिक यात्रा का सजीव वर्णन किया है। इसमें उनका कवि हृदय और स्वदेश प्रेम भी झलकता है।

❑ **लोकगुरु बुद्ध** *२००३, पृष्ठ १२, रु. १०/-*

❑ **बाह्य सुरक्षा (देश की बाह्य सुरक्षा)** *२००३, पृष्ठ ८, रु. ५/-*

❑ **गणराज्य की सुरक्षा कैसे हो?** *२००३, पृष्ठ १२, रु. ६/-*

❑ **शाक्यों और कोलियों के गणतंत्र का विनाश क्यों हुआ?** *२००३, पृष्ठ २०, रु. १०/-*
इसमें इस बात का विस्तृत विवरण है कि भगवान बुद्ध की शिक्षा की अवमानना तथा जाति-भेद की कट्टरता न केवल शाक्यों तथा कोलियों के विनाश का कारण बनीं बल्कि वे किसी के भी विनाश का कारण बन सकती हैं।

❑ **अंगुत्तर निकाय (हिन्दी अनुवाद) भाग-१** *२००४, पृष्ठ ३२८, रु. १२५/-*
इस पुस्तक में एकक निपात से लेकर एकादशक निपात में एक से लेकर उत्तरोत्तर बढ़ते क्रम से ग्यारह धर्मों के संबंध में भगवान बुद्ध के उपदेश संगृहीत हैं।

❑ **केंद्रीय कारागृह जयपुर, विपश्यना का प्रथम जेल शिविर** *२००५, पृष्ठ ८४, रु. ५०/-*

❑ **विपश्यना : लोकमत भाग-१** *२००५, पृष्ठ १४०, रु. ५५/-*
इसमें विपश्यना के बारे में 'लोकमत' जानने के लिए विपश्यना शिविर में भाग लेने वाले साधकों-साधिकाओं के लेख एवं दस-दिवसीय शिविर के दसवें दिन निजी अनुभवों की जानकारी प्रस्तुत है।

❑ **विपश्यना : लोकमत भाग-२** *२००५, पृष्ठ १७६, रु. ७०/-*
इसमें विपश्यना के बारे में 'लोकमत' जानने के लिए दीर्घ शिविर किये साधकों के अनुभव प्रस्तुत हैं।

❑ **अग्रपाल राजवैद्य जीवक** *२००५, पृष्ठ ३६, रु. २०/-*
इस पुस्तक में बुद्धकालीन आयुर्वेद चिकित्सक जीवक का, जो श्रोतापन्न थे उनका जीवन वृत्तांत दिया हुआ है। जीवक भगवान बुद्ध और उनके भिक्षुसंघ की चिकित्सा-सेवा करते थे।

❑ **मंगल हुआ प्रभात** *१९९०, पृष्ठ २०६, रु. १२०/-*
पू. गुरुजी द्वारा प्रणीत दोहों का एक अमूल्य संग्रह। साधकों तथा अन्यों द्वारा प्रशंसित।

❑ **पथ-प्रदर्शिका** *पृष्ठ ६, रु. २/-*

❑ **विपश्यना क्यों?** *पृष्ठ ४, रु. १/-*

❑ **सम्राट अशोक के अभिलेख** *२००६, पृष्ठ १७६, रु. ७०/-*
भारत तथा उससे बाहर के देशों में सम्राट अशोक के अभी तक ४२ अभिलेख खोजे जा चुके हैं। इस अभिलेखों में सम्राट के जो अनुदेश अंकित हैं उनकी जानकारी हर किसी को होना नितांत आवश्यक है। इसी उद्देश्य से इस पुस्तक को प्रकाशन में लाया गया है।

❑ **प्रमुख विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायणजी गोयन्का का संक्षिप्त जीवन-परिचय** *२००६, पृष्ठ २६, रु. ३०/-*

❑ **अहिंसा किसे कहें?** *२००६, पृष्ठ ३२, रु. १५/-*
इस पुस्तक में विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायण गोयन्काजी का सार्वजनिक प्रवचन है।

❑ **भगवान बुद्ध के महाश्रावक लकुण्डक भद्दिय** *२००६, पृष्ठ १६, रु. १०/-*
इस पुस्तक में 'लकुण्डक भद्दिय' का संक्षिप्त जीवनवृत्तांत है।

❑ **गौतम बुद्धः जीवन-परिचय और शिक्षा** *२००६, पृष्ठ ४६, रु. २५/-*
इस पुस्तक में बुद्ध का संक्षिप्त जीवन-परिचय तथा छः ऐतिहासिक संगितियों का वर्णन है।

❑ **भगवान बुद्ध की साम्प्रदायिकता-विहीन शिक्षा** *२००७, पृष्ठ २०, रु. १०/-*
इस पुस्तक में भगवान बुद्ध की साम्प्रदायिकता-विहीन विपश्यना साधना का वर्णन है। यह सार्वजनीन है तथा यह जाति, धर्म, सम्प्रदाय, राष्ट्र सबसे परे है।

❑ **बुद्धजीवन-चित्रावली** *२००८, पृष्ठ ७६, रु. ३३०/-*

❑ **भगवान बुद्ध के अग्रश्रावक महामोग्गल्लान** *२००८, पृष्ठ १०४, रु. ४५/-*
इस पुस्तक में भगवान बुद्ध के अग्रश्रावक 'महामोग्गल्लान' के संक्षिप्त जीवनवृत्तांत का वर्णन है ।

❑ **क्या बुद्ध नास्तिक थे?** *२००८, पृष्ठ २२४, रु. ८५/-*
इस पुस्तक में बताया गया है कि 'आस्तिक' व्यक्ति वह होता है जो अस्तित्व को स्वीकार करे और 'नास्तिक' वह जो अस्तित्व को स्वीकार न करे। इसका निराकरण विस्तारपूर्वक किया गया है ।

❑ **महामानव बुद्ध की महान विद्या : विपश्यना का उद्गम और विकास** *२००९, पृष्ठ २६०, रु. ६२५/-*

❑ **तिपिटक में सम्यक संबुद्ध, (६ भागों में अजिल्द)**
भाग-१ रु. ६५/-, भाग-२ रु. ८५/-, भाग-३ रु. ५५/-, भाग-४ रु. ४५/-, भाग-५ रु. ४५/-, भाग-६ रु. ५५/-

❑ **भगवान बुद्ध के महाश्रावक महाकस्सप** *२००९, पृष्ठ ७४, रु. ४०/-*
इस पुस्तक में महाकस्सप का जीवन वृत्तांत है ।

❑ **महामानव बुद्ध की महान विद्या : विपश्यना का उद्गम और विकास** *२०१०, पृष्ठ १४४, रु. १४५/-*
"बुद्धजीवन-चित्रावली" का संक्षिप्त वर्णन इस पुस्तक में है ।

❑ **अनाथपिण्डिक** *२०१०, पृष्ठ ११८, रु. ५०/-*
कालांतर में अनाथों और दीन-दुःखियों को भोजन-वस्त्र आदि दान देने के कारण वह अनाथपिण्डिक नाम से प्रसिद्ध हुआ।

❑ **किसागोतमी** *२०१०, पृष्ठ ४६, रु. ३०/-*
"किसागोतमी" अपने प्यारे बच्चे की मृत्यु होने पर भगवान बुद्ध के पास आयी और भगवान की वाणी सुनकर नितांत दुःख-विमुक्ति के मार्ग पर प्रतिष्ठित हुई ।

❑ **चित्त गृहपति एवं हत्थक आळवक** *२०१०, पृष्ठ ५८, रु. ३०/-*
इस पुस्तिका में बुद्ध में अपार श्रद्धा रखने वाले तथा उनके धर्मोपदेश से गहरे रूप से प्रभावित दो गृहस्थों की प्रेरणादायिनीं जीवनियां वर्णित हैं।

❑ **खुशियों की राह** *१९९३, पृष्ठ ४८, रु. १५०/-*
चित्रों के माध्यम से बच्चों को आनापान ध्यान की भावना सिखाने के लिए यह बड़ी ही उपयोगी पुस्तक है।

❑ **विसाखा मिगारमाता** *२०११, पृष्ठ ८६, रु. ४५/-*
इस पुस्तक में आदर्श नारी एवं भगवान बुद्ध में अत्यंत श्रद्धा रखने वाली, दान देनेवालियों में अग्र विसाखा मिगारमाता का जीवन वृत्तान्त तो है ही साथ ही आदर्श नारी के गुणों का भी वर्णन है।

❑ **मगधराज सेनिय बिम्बिसार** *२०१०, पृष्ठ ११२, रु. ४५/-*
इस पुस्तिका में बुद्ध में अत्यंत श्रद्धा रखनेवाले मगधराज सेनिय बिम्बिसार का जीवन वृत्तान्त है।

❑ **बुद्धसहस्सनामावली (पालि एवं हिंदी)** *२०१०, पृष्ठ ७०, रु. ३५/-*

❑ **भगवान बुद्ध के उपस्थाक आनन्द** *२०११, पृष्ठ २२८, रु. १३०/-*

❑ **जीने की कला** *२०११, पृष्ठ १९०, रु. ७०/-*

❑ **परम तपस्वी श्री रामसिंह जी** *२०११, पृष्ठ १५२, रु. ५५/-*

❑ **भगवान बुद्ध की अग्रउपासिकाएं खुज्जुत्तरा एवं सामावती तथा उत्तरानन्दमाता** *२०११, पृष्ठ ४८, रु. २५/-*

❑ **विपश्यना पत्रिका संग्रह भाग - १** *२०१२, पृष्ठ २२४, रु. ८०/-*

❑ **विपश्यना पत्रिका संग्रह भाग - २** *२०१२, पृष्ठ २०८, रु. ७५/-*

❑ **आदर्श दंपति नकुलपिता एवं नकुलमाता** *२०१२, पृष्ठ २८, रु. २५/-*

❑ **तिक-पट्ठान (संक्षिप्त रूपरेखा)** *२०१२, पृष्ठ ६८, रु. ३५/-*

❑ **भगवान बुद्ध के अग्रश्रावक सारिपुत्त** *२०१३, पृष्ठ १५६, रु. ६५/-*

❑ **बरमा में लिखी गयी मेरी कविताएं** *२०१३, पृष्ठ १९२, रु. ३००/-*

❑ **वाहिय दारुचीरिय एवं भद्दा कुण्डलकेसा** *२०१३ पृष्ठ ४४, रु. ३०/-*

❑ **राहुल एवं रट्ठपाल** *२०१३ पृष्ठ ७२, रु. ४०/-*

❑ **पुण्ण मन्ताणिपुत्त एवं धम्मदिन्ना** *२०१३ पृष्ठ ४८, रु. ३०/-*

❑ **सोण कोळिविस एवं सोणा** *२०१३ पृष्ठ ३६, रु. ३०/-*

❑ **राहुलमाता (यशोधरा)** *२०१३ पृष्ठ ५६, रु. ३५/-*

❑ **भगवान बुद्ध के महाश्रावक आयुष्मान अनुरुद्ध** *२०१३ पृष्ठ ६०, रु. ३५/-*

❑ **प्रारंभिक पालि** *२०११, पृष्ठ १५८, रु. ८५/-*
सीधे रचना के माध्यम से पालि व्याकरण सिखाने के लिये यह पुस्तक बड़ी उपयोगी है। लिली डे सिलवां द्वारा अंग्रेजी में लिखी पुस्तक का यह हिन्दी अनुवाद है।

❑ **प्रारंभिक पालि की कुंजी** *२०११, पृष्ठ ८२, रु. ५०/-*
प्रारंभिक पालि में दिये गये अभ्यासों की यह कुंजी है जो सीखने वालों को सिखाने वाले के अभाव में सहायता करेगी।

❑ **धम्म-वंदना (पालि-हिन्दी)** *२००६, पृष्ठ ११०, रु. ४५/-*
यह तिपिटक की गाथाओं का हिन्दी अनुवाद के साथ संग्रह है।

❑ **धम्मपद (पालि-हिन्दी)** *२००१, पृष्ठ ११०, रु. ४५/-*
धम्मपद की गाथाओं का हिन्दी अनुवाद।

❑ **बुद्धगुणगाथावली (पालि)** *१९९९, पृष्ठ १७०, रु. ३०/-*

❑ **बुद्धसहस्सनामावली (पालि)** *१९९८, पृष्ठ ६४, रु. १५/-*

❑ **महासतिपट्ठानसुत्त (समीक्षा के साथ अनुवाद)** *१९९६, पृष्ठ १४६, रु. ५५/-*
महासतिपट्ठानसुत्त में भगवान बुद्ध ने साधना के बारे में विस्तार से बताया है। यह पुस्तक इस सुत्त का अनुवाद है। साथ ही इसमें पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या भी दी गयी है।

❑ **महासतिपट्ठानसुत्त (अनुवाद)** *१९९६, पृष्ठ ५६, रु. ३५/-*
महासतिपट्ठानसुत्त का अनुवाद तथा पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या।

❑ **विश्व विपश्यना स्तूप का संदेश (हिंदी, मराठी, अंग्रेजी)** *२००९, पृष्ठ ३२, रु. १००/-*

राजस्थानी प्रकाशन

❑ **जागो लोगां जगत रा** *१९८८, पृष्ठ २६०, रु. ४५/-*

❑ **परिभाषा धरम री** *२००६, पृष्ठ ३६, रु. १०/-*

❑ **५ राजस्थानी पुस्तिकाओं का सेट** *रु. ५.००*

पंजाबी

❑ **धर्मः आदर्श जीवन का आधार** *२०१२, पृष्ठ ११४, रु. ५०/-*

❑ **निर्मल धारा धर्म की** *२०१२, पृष्ठ १६८, रु. ७०/-*

उर्दू

❑ **जीने का हुनर** *२००९, पृष्ठ २२०, रु. ७५/-*

ENGLISH PUBLICATIONS

❑ **Sayagyi U Ba Khin Journal**
1991, 302 pages. Rs 225/-
This journal commemorates Sayagyi's exemplary life and teachings. It contains his discourses, biographical sketches of his life and the lives of the teachers who preceded him as well as articles on various aspects of Vipassana.

❑ **Essence of Tipitaka by U Ko Lay**
1995, 242 pages. Rs 130/-

❑ **The Art of Living by William Hart**
1988, 186 pages. Rs 90/-
A full-length study of the teaching of Vipassana useful both for meditators and non-meditators alike. Includes illustrative stories as well as answers to student's questions that convey a vivid sense of the teaching.

❑ **The Discourse Summaries**
1987, 110 pages. Rs 65/-
Summaries of the evening discourses by S.N. Goenka given during a ten-day course of Vipassana.

❑ **Healing the Healer & The Experience of Impermanence by Dr Paul Fleischman**
1991, 42 pages. Rs 35/-
It describes the benefit of Vipassana to those who are serving in the medical profession.

❑ **Come People of the World**
1989, 48 pages. Rs 40/-
Translations of selected Hindi couplets from Goenkaji's chantings.

❑ **Gotama the Buddha: His Life and His Teaching**
1992, 54 pages. Rs 45/-
A brief sketch of the life and teaching of the Buddha and a description of the six historical Councils.

❑ **The Gracious Flow of Dharma**
1994, 86 pages. Rs 55/-
Condensed from three-day public talks of S.N. Goenka explaining the true meaning of Dhamma (Dharma in Sanskrit), which has now been mistakenly used to refer to 'sect' or 'sectarianism'. Goenkaji explains in detail how to live a good Dhammic life - a life full of peace and harmony through the practice of Vipassana.

❑ **Discourses on Satipatthana Sutta**
1999, 142 pages. Rs 90/-
Evening discourses by S.N. Goenka during the 8-day course of meditation during which he expounds the Mahasatipatthana Sutta.

❑ **The Wheel of Dhamma Rotates**
2012, 368 pages. Rs 850/-
A concise informative compilation on the Vipassana Centres in India and around the world with pictures.

❑ **Dharma: Its True Nature**
1998, 84 pages. Rs 115/-
A collection of papers presented at the International Seminar sponsored by V.R.I. at Dhammagiri, Igatpuri in May 1995.

❑ **Vipassana: Its Relevance to the Present World**
2002, 152 pages. Rs 160/-
A collection of papers presented at the International Seminar sponsored by V.R.I. in New Delhi in April 1994. The papers focus on Vipassana's impact in the fields of education, prison reforms, improved management in business and Government.

❑ **Vipassana Addictions & Health (Seminar 1989)**
1990, 88 pages. Rs 115/-
A collection of papers presented at the International

Seminar sponsored by V.R.I. at Dhamma Giri, Igatpuri in 1989. It focuses on the beneficial effects of Vipassana on drug addicts and general health.

❑ **The Importance of Vedana and Sampajanna (Seminar 1990)** *1990, 146 pages. Rs 135/-*

This covers the important topic of the Buddha's teaching "Vedana and Sampajanna" in great detail.

❑ **Pagoda Seminar 1997** *1997, 140 pages. Rs 80/-*

The papers presented at the time of the foundation-stone laying ceremony of the Grand Vipassana Stupa being built near Mumbai.

❑ **Psychological Effects of Vipassana on Tihar Jail Inmates** *1995, 56 pages. Rs 80/-*

❑ **Effect of Vipassana Meditation on Quality of life, Subjective Well-Being and Criminal Propensity among Inmates of Tihar Jail, Delhi** *2002, 56 pages. Rs 100/-*

❑ **A Re-appraisal of Patanjali's Yoga Sutras, by S. N. Tandon** *1995, 140 pages. Rs 85/-*

Patanjali, the author of Yoga Sutras wrote his scholarly works a few centuries after the Buddha, and has drawn heavily from the teachings of the Buddha. An in-depth study of the similarities and dissimilaritiesof the two.

❑ **Manuals of Dhamma** *1999, 296 pages. Rs.280/-*

This book contains the English translations of Venerable Ledi Sayadaw's authoritative essays on the essence of Buddha's teachings

❑ **Was the Buddha a Pessimist?** *2001, 86 pages. Rs 65/-*

The Buddha was not a pessimist. This is explained in detail with examples.

❑ **Mahasatipatthana Sutta** *1985, 122 pages. Rs 65/-*

An annotated translation of 'Mahasatipatthana Sutta', the primary discourse in which the Buddha described the practice of meditation in detail.

❑ **Pali Primer by Lily De va** *1994, 174 pages. Rs 95/-*

A guide to learn the Pali language.

❑ **Key to Pali Primer by Lily De Silva** *1998, 84 pages. Rs 55/-*

Gives answers to the test questions in 'Pali Primer". An aid in learning

❑ **Manual of Vipassana Meditation by U Ko Lay** *2002, 138 pages. Rs 85/-*

This book throws light on the scientific aspect of the Buddha's Teaching.

❑ **For the Benefit of Many** *2002, 218 pages. Rs 170/-*

This book contains a valuable compilation of Goenkaji's talks and question-answer sessions.

❑ **Realising Change** *2003, 256 pages. Rs 160/-*

This book featuring accounts by Vipassana practitioners leading everyday lives, aims to make Vipassana both better known and more clearly understood.

❑ **The Clock of Vipassana has Struck** *2003, 254 pages. Rs 130/-*

This volume celebrates Sayagyi U Ba Khin's exemplary life. It contains a collection of his writings and discourses, a biological sketch of his life and the lives of the teachers who preceded him, and is woven together with an extensive interview with his reknowned disciple, S.N.Goenka.

❑ **Meditation Now - Inner Peace through Inner Wisdom** *2003, 138 pages. Rs 85/-*

A collection of articles by Goenkaji commemorating his tour of North America in 2002 including The Universal Message of Peace (Millennium World Peace Summit, New York), The Meaning of Happiness (World Economic Forum, Davos, Switzerland) etc.

❑ **Defence Against External Invasion** *2003, Pages 8, Rs. 10/-*

❑ **How to Defend the Republic** *2003, Pages 12, Rs. 6/-*

❑ **S. N. Goenka at the United Nations** *2003, 32 Pages, Rs. 35/-*

Talks given by Goenkaji at United Nations on
a) The Universal Dhamma. b) The subject which put the teaching of the historical Buddha in a modern perspective.

❑ **Why Was the Sakyan Republic Destroyed?** *2004, 20 pages, Rs. 12/-*

❑ **The Caravan of Dhamma** *2004, 198 pages, Rs. 90/-*

Diary of S. N. Goenka's "Meditation Now" Tour of Europe and North America, April 10 to August 15, 2002. This diary gives sprinkling details of this remarkable tour and merely gives glimpses of Goenkaji's daily life on the tour.

❑ **Vipassana in Government** *Rs. 1/-*

❑ **Peace within oneself, for Peace in the World (International Buddha Seminar, Sarnath,1998)** *1998, 20 pages, Rs. 30/-*

In this booklet Sri S.N. Goenka shows that unless one has peace within oneself there can be no peace in the world. He also shows here how peace within oneself can be attained by practicing vipassana.

❑ **Guidelines for the Practice of Vipassana Meditation** *Rs. 2/-*

❑ **The Global Pagoda Souvenir 29 Oct.2006 (English & Hindi)** *2006, 306 pages, Rs. 60/-*

This souvenir brought oct in 2006 contains several very important articles, one being the excerpts of Goenkaji's message to meditators in the one-day course at the Globla Pagoda on oct 1, 2006 the first ever course within the completed main dome.

❑ **The Gem Set In Gold** *2006, 136 pages, Rs. 75/-*

It is an English translation of the manual of pariyatti containing the Pali and Hindi chanting from a ten-day course of vipassana meditation as taught by Acharya Satyanarayanji Goenka.

❑ **The Buddha's Non-Sectarian Teaching** *2007, 20 Pages, Rs. 15/-*

Deals with this book the Buddha's practical teaching of Vipassana Which is not only universal but also absolutely non-sectarian this technique of meditation is for all irrespective of casts, creed, religion, ethnic group and nationality

❑ **Acharya S. N. Goenka: An Introduction** *2007, 26 Pages, Rs. 35/-*

This book gives a brief life sketch of Acharya Satyanarayan Goenka and the honours he received from various countries.

❑ **Value Inculcation through Self-Observation** *2007, 72 Pages, Rs. 55/-*

❑ **Pilgrimage to the Sacred Land of Dhamma (Hard Bound)** *2009, 154 pages, Rs. 750/-*

This book is a collection of beautiful photographs that were taken during several pilgrimages to Myanmara led by Acarya Satyanarayan Goenka. Besides an introduction to vipassana and an article on the significance of Pagoda it also has several other articles by Sri Satyanarayan Goenka.

❑ **An Ancient Path** *2009, 190 pages, Rs. 120/-*

This book by Paul R. Fleishman is a collection of talks given to different audiences in different countries. These talks are given from vipassana point of view on subjects like mental health, mindfulness, karma and chaos etc.

❑ **Vipassana Meditation and the Scientific World View** *2010, 32 pages, Rs. 30/-*

This covers the Important topic of Awareness of the meaning of the rising and passing of body sensations. it is established as the meditative gateway to the experience of reality, as defined both by the Buddha, and by the scientific world-view.

❑ **The Path of Joy** *1993, 48 pages, Rs. 200/-*

It is a very useful book for teaching Ānāpana to the children through pictures.

❑ **The Great Buddha's Noble Teachings The Origin & Spread of Vipassana (Small)** *2011, 144 Pages, Rs. 160/-*

❑ **Vipassana Meditation and its Relevance to the world** (The Coffee Table) *2011, 152 pages, Rs. 800/-*

❑ **The Great Buddha's Noble Teachings The Origin & Spread of Vipassana (Big H.B.)** *2011, 260 Pages, Rs. 650/-*

❑ **Chronicles of Dhamma** *2012, Pages 272, Rs. 260/-*

❑ **Set of 9 English Pamphlets** *Rs. 11.00*

Spanish

❑ **For the Benefit of Many** *2006, 332 pages, Rs. 190/-*

❑ **The Art of Living** *2009, 236 pages. Rs 130/-*

❑ **The Path of Joy** *1993, 48 pages, Rs. 300/-*

French

❑ **Gotama the Buddha: His Life and His Teachings** *2004, 58 pages, Rs. 50/-*

❑ **Meditation Now - Inner Peace through Inner Wisdom** *2004, 152 pages, Rs 80/-*

❑ **For the Benefit of Many** *2011, 218 pages, Rs. 195/-*

❑ **The Path of Joy** *1993, 48 pages, Rs. 300/-*

Malayalam

❑ **Pravachan Saransh** *2008, 110 pages, Rs. 45/-*

❑ **Nirmal Dhara Dharm Ki** *2010, 102 Pages, Rs. 45/-*

Bangali

❑ **Pravachan Saransh** *2007, 136 pages, Rs. 35/-*

❑ **Dharam: Adarsh Jivan ka Adhar** *2008, 124 pages, Rs. 30/-*

❑ **Mahasatipatthana Sutta** *2012, 200 pages. Rs 90/-*

Telugu

❑ **Mangal Jage Grihi Jivan Men** *2007, 118 pages, Rs. 35/-*

Tamil

❑ **The Art of Living by William Hart** *2003, 192 pages. Rs 90/-*

❑ **The Discourse Summaries** *2005, 112 pages Rs. 30/-*

❑ **The Gracious Flow of Dhamma** *2005, 104 pages Rs. 55/-*

मराठी प्रकाशन

❑ **जगण्याची कला** *१९९२, पृष्ठ २०२, रु. ७५/-*
हे पुस्तक विल्यम हार्ट यांच्या "आर्ट ऑफ लिव्हींग" या पुस्तकाचे भाषांतर आहे. यात साधक व इतर सर्वांच्या उपयोगात येईल अशा विपश्यना साधनेबद्दल संपूर्ण माहीती दिलेली आहे.

❑ **जागे पावन प्रेरणा** *१९९४, पृष्ठ २४२, रु. ८०/-*
हे पुस्तक, याच नावाच्या हिन्दी पुस्तकाचे भाषांतर आहे. यामध्ये गोयन्काजींचे काही लेख दिलेले आहेत ज्यात सोप्या व सुबोध भाषेत बुद्धांचे जीवन व त्यांच्या शिकवणुकी वर प्रकाशझोत टाकलेला आहे.

❑ **प्रवचन सारांश** *१९९८, पृष्ठ १०२, रु. ४५/-*
या पुस्तकात दहा-दिवसीय शिबीरातील गोयन्काजींच्या प्रवचनांचा सारांश दिलेला आहे.

❑ **धर्मः आदर्श जीवनाचा आधार** *२००७, पृष्ठ ११४, रु. ४५/-*
हे पुस्तक, याच नावाच्या हिन्दी पुस्तकाचे भाषांतर आहे. यात धर्म काय आहे, हे सोप्या व समजण्यासारख्या पद्धतीने सांगितलेले आहे.

❑ **जागे अंतर्बोध** *२००१, पृष्ठ १८४, रु. ६५/-*
हे पुस्तक, याच नावाच्या हिन्दी पुस्तकाचे भाषांतर आहे. हा जागे पावन प्रेरणा पुस्तकात दिलेल्या माहितीचा पुढचा भाग आहे आणि यात बुद्धांच्या शिकवणुकी वर खोलवर प्रकाशझोत टाकलेला आहे.

❑ **निर्मळ धारा धर्माची** *२००४, पृष्ठ १३४, रु. ४५/-*
हे पुस्तक, याच नावाच्या हिन्दी पुस्तकाचे भाषांतर आहे. विपश्यना विद्या सार्वदेशिक, सार्वजनीक आणि सार्वकालिक आहे – देश, जात आणि समाज यांच्या मर्यादिपासून अगदी मुक्त यात संपूर्ण मानव जातीचे कल्याण सामावलेले आहे, हे या पुस्तकात आचार्य गोयंकजींनी समजावून सांगितले आहे.

❑ **महासतिपट्ठानसुत्त (समीक्षा)** *२००६, पृष्ठ ८६, रु. ४०/-*
महासतिपट्ठानसुत्रात भगवान बुद्धांनी साधनेच्या बाबतीत विस्तारपूर्वक सांगितले आहे. तसेच यामधे पारिभाषिक शब्दांची व्याख्या दिलेली आहे.

❑ **महासतिपट्ठानसुत्त (अनुवाद)** *२००६, पृष्ठ ८६, रु. ४५/-*
महासतिपट्ठानसुत्राचा अनुवाद आणि पारिभाषिक शब्दांची व्याख्या यात आहे.

❑ **मंगलमय गुहस्थ जीवन** *२००६, पृष्ठ १०६, रु. ४०/-*
बुद्धवाणी वर आधारित या पुस्तकात हे समजवुन सांगितले आहे कि गृहस्थ गृही जीवनात कशाप्रकारे सामंजस्य स्थापित करू शकतो.

❑ **भगवान बुद्धाची सांप्रदायिकता-विहिन शिकवणुक** *२००८, पृष्ठ २०, रु. १२/-*

❑ **बुद्धजीवन-चित्रावली** *२००८, पृष्ठ ७६, रु. ३३०/-*

❑ **आनंदाच्या वाटेवर** *१९९३ पृष्ठ ४८, रु. १५०/-*
हे पुस्तक लहान मुलांसाठी लिहीले आहे. ह्या पुस्तकात थोडक्यात लहान मुलांसाठी असणाऱ्या 'आनापान शिबिराची' माहिती दिलेली आहे.

❑ **आत्म-कथन भाग-१** *२०१० पृष्ठ १३०, रु. ५०/-*
ही पुज्य गुरुजींची आत्मकथा आहे, ज्यात त्यांनी आपल्या आध्यात्मिक यात्रेचे वर्णन केलेले आहे. यात त्यांचे कवी हृदय आणि स्वदेश प्रेम झळकते.

❑ **अग्रपाल राजवैद्य जीवक** *२०१० पृष्ठ ३८, रु. २०/-*
या पुस्तकात बुद्धकालीन आयुर्वेद चिकित्सक जीवक जे श्रोतापन्न होते त्यांचा जीवन वृतांत दिला आहे. जीवक भगवान बुद्ध आणि त्यांच्या भिक्षुसंघाची चिकित्सा-सेवा करीत होते.

❑ **महामानव बुद्धाची महान विद्या विपश्यनाः उगम आणि विकास** *२०११, पृष्ठ १४४, रु. १२५/-*
'बुद्धजीवन - चित्रावली' चे संक्षिप्त वर्णन ह्या पुस्तकात आहे.

❑ **लोकगुरु बुद्ध** *२०११, पृष्ठ १२, रु. १०/-*
ह्या पुस्तिकेत पूज्य गुरुजींनी समजावून दिले आहे की भगवान बुध्दांची शिकवण केवळ भिक्षूंसाठी नसून, गृहस्थांसाठीही तेवढीच लाभदायक आहे. त्यामुळेच भगवान बुध्द लोकगुरु झाले.

❑ **लकुण्डक भद्दिय** *२०११, पृष्ठ १६, रु. १२/-*

❑ **प्रमुख विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायणजी गोयंका यांचा संक्षिप्त जीवन-परिचय** *२०११, पृष्ठ २६, रु. १८/-*

❑ **भगवान बुद्धांचे अग्रउपासक अनाथपिण्डिक** *२०१३, पृष्ठ ११६, रु. ४५/-*

❑ **भगवान बुद्धांची अग्रउपासिका विसाखा मिगारमाता** *२०१३, पृष्ठ ८४, रु. ३५/-*

❑ **भगवान बुद्धांचे अग्रउपासक चित्त गृहपति व हत्थक आळवक** *२०१३, पृष्ठ ६०, रु. ३०/-*

❑ **भगवान बुद्धांची अग्रश्राविका किसागोतमी** *२०१३, पृष्ठ ४४, रु. २५/-*

❑ **धम्मपद (पालि-मराठी)** *२०१३, पृष्ठ १०८, रु. ४५/-*

गुजराती प्रकाशन

❑ **धर्मः आदर्श जीवननो आधार** *२००५, पृष्ठ १३०, रु. ५०/-*

❑ **प्रवचन सारांश** *१९९५, पृष्ठ ८८, रु. ४५/-*

❑ **महासतिपट्ठानसुत्त (अनुवाद सहित)** *२००१, पृष्ठ ५६, रु. २०/-*

❑ **धारण करे तो धर्म** *२००१, पृष्ठ १८६, रु. ८०/-*

❑ **जागे अंतर्बोध** *२००१, पृष्ठ २०६, रु. ७५/-*

❑ **जागे पावन प्रेरणा** *२००४, पृष्ठ २३८, रु. १००/-*

❑ **क्या बुद्ध दुःखवादी थे?** *२००४, पृष्ठ ८२, रु. ३०/-*

❑ **निर्मल धारा धर्म की** *२००४, पृष्ठ १५८, रु. ९०/-*

❑ **विपश्यना शा माटे? (पुस्तिका)** *पृष्ठ ६, रु. २/-*

❑ **मंगल जगे गृही जीवन में** *२००५, पृष्ठ ११४, रु. ३५/-*

❑ **लोक गुरु बुद्ध** *२००८, पृष्ठ १६, रु. ६/-*

❑ **बुद्धजीवन-चित्रावली** *२००८, पृष्ठ ७६, रु. ३३०/-*

❑ **भगवान बुद्ध की साम्प्रदायिकता-विहीन शिक्षा** *२०१०, पृष्ठ २०, रु. १०/-*

❑ **सम्राट अशोक के अभिलेख** *२०१२, पृष्ठ १७६, रु. ७५/-*